

College, R.B.A.R. College, Maharajganj,
Course - T.O.C. part III
Sub - political science
paper - I public Administration
Topic - "Methods and Approaches
to the study of P. A."

Page no. :
Date : / /

presented by Dr. M. Kalimullah
Designation B. professor.

dept of pol. sc.

Introduction →

समय सामाजिक-विकासों की
गति लोक-प्रशासन के अध्ययन के
लिए भी कई पद्धतियों एवं उपानामों का
विवरण दिया गया है। लोक-प्रशासन
की प्रकृति में परिवर्तन तथा इसके क्षेत्र में
विवर्धन के साथ-साथ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष
पद्धतियों के साथ-साथ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष
की विचार दृष्टि है। इसके अध्ययन के
लिए विचारित उपानामों में यांत्रिक उपानाम
के साथ-साथ सामाजिक उपानाम की
विवर्धित दृष्टि है। प्रत्यक्ष पद्धतियों की
उपानाम लोक-प्रशासन के अध्ययन में
अध्ययन की प्रत्यक्ष पद्धतियों एवं उपानामों
के अपने लाभ तथा कमजोरियाँ हैं।

लोक-प्रशासन के विभिन्न
पद्धतियों तथा उपानामों का अध्ययन
इस प्रकार दिया जा सकता है →

(2)

① ऐतिहासिक पद्धति (Historical Method)

लोक-प्रशासन के अध्ययन के लिए ऐतिहासिक पद्धति का महत्वपूर्ण

माना जाता है। प्रत्येक देश के प्रशासन पर उस देश की परम्पराओं का बहुत बलवत् प्रभाव पड़ता है। इसे समझने के लिए इतिहास की सहायता की जाती है। लोक-प्रशासन के ऐतिहासिक अध्ययन से ही वर्तमान लोक-प्रशासन को अधिक सफल तथा उपयोगी बनाया जा सकता है। प्रशासन-समस्याएँ बहुत-सी वर्तमान समस्याओं का इतिहास रहा। प्राचीन प्रशासनिक अनुभवों के ज्ञान पर प्रकाशपा जा सकता है। ऐतिहासिक व्यक्तियों के ज्ञान पर ही प्रशासन को गति मिले जाये।

② न्यायिक पद्धति (Legal Method) -

न्यायिक पद्धति का अर्थ है कि लोक-प्रशासन को ऐसे ही समझना है जो कि न्यायिक पद्धति है। न्याय के प्राविण्य देशों के लोक-प्रशासन का अध्ययन न्यायिक पद्धति के आधार पर किया जाता है। न्याय को दो भागों में विभाजित किया जाता है - प्रशासनिक न्याय तथा न्यायिक न्याय। प्रशासनिक न्याय के अन्तर्गत राज्य प्रशासन, न्यायिक

(3)

प्रयोग-प्रशासन का प्रशासन, सांख्यिकीय
निर्माण तथा प्रशासन के प्रयोग (योग) के
समावेश और कार्य को सांख्यिकीय है,
जो कि सांख्यिकीय कार्य और डाटा प्रशासन के
प्रयोग के साथ वास्तव में किया जाता है तथा
उनके बीच एक बंधन स्थापित किया जाता
है। इनके बिना तो इस अध्ययन पढ़ाई
को सराहना नहीं है। लेकिन इन पढ़ाई को
एक ही तरीके से यह है कि इनमें सामाजिक,
मनोवैज्ञानिक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोणों को
बोझ दिया नहीं दिया जाता है।

(3) वैज्ञानिक पद्धति (Scientific
Method) - ऊपर विद्वानों की राय है कि
सोव-प्रशासन का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति
समय दृष्टिकोण से होना चाहिए। क्योंकि
सोव-प्रशासन के कार्यप्रणाली को भी
वैज्ञानिक विचारों का प्रयोग होना चाहिए
है। सोव-प्रशासन के इस पद्धति के प्रयोग में
समावेश करने का प्रयत्न करने की विधि
वैज्ञानिक विचारों को जाना है। इसका विचार
है कि इस प्रकार के विचारों के प्रयोग
के लिए वैज्ञानिक विचारों पर सर्वोत्तम मार्ग
का विचार करने का प्रयत्न है।

(4) प्रयोगात्मक पद्धति (Experimental
Method) - सोव-प्रशासन के सम्पूर्ण
समावेश ही प्रशासन का प्रयोगात्मक प्रयोग
है। प्रयोग नहीं की, तथा व्यापक

(4) यह संसार का निर्माण और सभी प्राणियों का तमजीव एक प्रयत्न है। ये प्रयत्न संसार के विभिन्न क्षेत्रों में ऊपर की ओर बढ़ते हैं, एवं वातावरण के अनुसार बदलते हैं, समय-समय पर विपरीत एवं विभिन्नता का निर्माण एवं प्रयत्न के फलित है। इनके सामाजिक परिवर्तन होते रहे हैं।

(3) तुलनात्मक पद्धति (Comparative Method) -

लोक-प्रशासन के अध्ययन के क्षेत्र में तुलनात्मक पद्धति अपनाने को कहते हैं। विभिन्न देशों, विभिन्न कालों तथा विभिन्न स्थितियों में प्रशासनिक व्यवस्थाओं तथा व्यक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन कर यह पता लगाया जाता है कि इसमें कितना समानता तथा असमानता है अपना प्राथमिक सम्यक् प्रशासन प्राप्त क्यों एक प्राथमिक है। इसके माध्यमिक तुलनात्मक लोक-प्रशासन के फलित विभिन्न देशों की शासन-पद्धतियों, नीतियों, संवैधानिक प्रशासन व्यवस्था तथा प्रशासनिक व्यवस्थाओं का अध्ययन तुलनात्मक द्वारा हो सकती है। इससे हमारे पर एक दूसरे देश की प्रमुख प्रशासनिक तमजीव को समझाकर विभिन्न देश अपनी प्रशासनिक पद्धतियाँ बना सकते हैं।

(6) पर्यवेक्षणात्मक पद्धति (Observa-

(5) Global Method) — यह वैश्विक पद्धति है। इस पद्धति में अन्तर्गत प्रशासनिक व्यवस्थाओं, उनकी प्रक्रियाओं और उनके संघर्ष का विश्लेषण अध्ययन एवं पर्यवेक्षण किया जाता है। इस पर्यवेक्षण के क्रम में लोक-प्रशासन के विद्वानों का निर्माण किए जाने से पूर्व इस प्रशासनिक प्रणाली का विस्तृत एवं बालो-पन्नात्मक अध्ययन कर लिया जाता है।

(7) राजनीतिक पद्धति (Political Method)
जॉन बी. स तथा पॉल ए. पलमर

जैसे विद्वानों के लोक-प्रशासन की राजनीति से मुख्य कारण से जोड़ व्यक्ता किया है। उनका विश्वास है कि प्रशासन की राजनीति से अलग नहीं रहना चाहिए क्योंकि लोक-प्रशासन राजनीति का ही व्यावहारिक रूप है। प्रशासन राजनीतिक प्रक्रिया (political process) का ही हिस्सा है। प्रशासनिक व्यवस्थाएं सदैव ही राजनीतिक व्यवस्थाओं की उपज होती हैं। राजनीति का कार्यपालिका द्वारा किए गए निर्णयों को ही प्रशासनिक कार्यपालिका लागू करती है, यानी राजनीति का सम्बन्ध राजनीति-विचारों से होता है और प्रशासन का सम्बन्ध उसके कार्यान्वयन से होता है। इसलिए प्रशासन के अध्ययन में राजनीति के दृष्टिकोण को अपना लेना आवश्यक है।

(6)

⑧ सामर्यात्मक अध्ययन पद्धति (Case study Method) —



सामर्यात्मक

अध्ययन पद्धति परम्परागत लोकोपशोध्य के प्राप्ति का वैश्वकाल की उपर है, यह पद्धति विशेष 1929 युद्ध के बाद लोकोपशोध्य के क्षेत्र में अध्ययन क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। सामर्यात्मक सामर्यात्मक अध्ययन पद्धति के अन्तर्गत मिली एक सामर्या को विभिन्न दृष्टि-बोधों से अध्ययन किया जाता है। इसमें अन्तर्गत जब किसी सामर्या पर विचार किया जाता है तो यह देखा जाता है कि ऐसी परिस्थिति क्यों आई के लो उपलब्धि हुई? मिल प्रशासनिक बोझान् डाटा डलवा समझातु किया गया तथा उसमें मिल प्रशासनिक तत्त्वकीयों का समाव भी, मिल के बगैर अच्छे परिणाम सामने नहीं आ सकते। इन सभी चीजों को जोड़ने के लिये मिली पिछले वह उसका रिपोर्ट सम्बन्धित विचार में देखा जाता है; ताकि गतिधर्म में इस प्रकार की समस्याओं पर विचार करने के लिए पुराने दिवसों की रफा डमी का सहका। विचार का लक्ष्य समाप्त है कि इन पद्धति के लोकोपशोध्य की

(7)

समस्याओं पर आंशिक दृष्टि
विभाजित है।



(क) मनोवैज्ञानिक पद्धति - Psychological
Method) -

सांख्यिक लक्षण-प्रशासन के
अध्ययन के मनोवैज्ञानिक पद्धति का महत्व
काफी बढ़ गया है। सांख्यिक लक्षण-प्रशासन
के विचारकों का मत है कि मानव-
मनोविज्ञान (Human Psychology) का
अध्ययन किए बिना प्रशासन नहीं
करी किशों को नहीं समझा जा सकता है।
मनोविज्ञान में सहायता है ही इस बात का
पता लगाता है कि वे लोग-सब मानसिक पारिस्थि-
तियाँ हैं, जिनका प्रकार प्रशासन पर पड़ता
है। अमेरिका, ब्रिटेन तथा France
आदि देशों में यह पद्धति अत्यन्त प्रचलित
है।

(ख) जीव-वृत्त-पद्धति (Biographical
Method) -

जीव-वृत्त-पद्धति (Bio-
graphical Method) ऐसी वैज्ञानिक
पद्धति है जिसमें-जुलतरी है। इस
पद्धति के अन्तर्गत विभिन्न प्रशासकों के
वृत्त तथा उनके कार्यों के आलेख
का अध्ययन किया जाता है जो
वर्तमान लक्षण-प्रशासन के लिए उपयोगी

(8)

विश्व, जो स्वतंत्र है। यह पद्धति भारत में उच्चतर लोकप्रिय है। किन्तु इस पद्धति की बाधना है यह रही है कि इसमें प्रशासनिक व्ययों की अपेक्षा राजनीतिक महत्व की बातों पर काफी बल दिया जाता रहा है।

(11) विषय-बस्तु पद्धति (Subject-Matter Method) — इस पद्धति की अन्तर्गत सामान्य प्रशासनिक विषयों को अध्ययन के लिए विभाजित किया गया था। व्यय व्ययों के आधार पर विशेष महत्व दिया जाता है। गान्ध, England, France, U.S.A. इत्यादि देशों में विषय-बस्तु पद्धति का प्रयोग बहुत समय से किया, जिसमें प्रशिक्षण, व्यवस्था का विचारण एवं संग्रह आदि विषयों के अध्ययन के लिए किया जाता रहा है। इसमें पूरी विषय-बस्तु को मुख्य आधार मानकर अध्ययन किया जाता है।

(12) व्यवहारिक पद्धति (Behavioural Method) —

व्यवहारिक पद्धति लोक-प्रशासन के अध्ययन की एक नवीन प्रणाली है। Herbert A. Simon, Robert A. Dahl, Simon H. Dwyer, Rigg आदि

- ⑨ लोक-प्रशासन में इस पद्धति के समर्थक हैं। इस पद्धति के समर्थक लोक-प्रशासन में अनुभवजन्य पद्धति कोण (Empirical approach) अपनाने पर जोर दिया जाता है। व्यवहार वादी पद्धति के अनुसार संलग्न विभिन्न पद्धतियों को एक साथ के वर्तक एवं मापदण्डों का अध्ययन किया जाता है। इस पद्धति के समर्थक यह कहते हैं कि लोक-प्रशासन के अध्ययन के विशेषता यह इस बात पर देना चाहिए कि प्रशासनिक सेवाओं में मानव-व्यवहार का स्वभाव कैसा होता है तथा सेवाओं को प्रदान करने वाले विभिन्न विषयों का अध्ययन कैसे करते हैं।

Conclusion-

लोक-प्रशासन का क्षेत्र आज इतना व्यापक व्यापक तथा जटिल हो गया है कि लोक-प्रशासन को अध्ययन करने के लिए एक पद्धति के इस सम्भव नहीं है। किन्तु एक पद्धति के इस लोक-प्रशासन की सम्पूर्ण समस्याओं को समाधान देना सम्भव नहीं है। प्रत्येक पद्धति के अपने गुण तथा कमियाँ हैं। साथ ही इनकी अपनी परिभाषा भी है। यह सम्भव है कि लोक-प्रशासन की प्रकृति पर निर्धारित है कि किसे परिभाषित है किन्तु पद्धति को अपनाया जा